राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • मंगलवार • 23 नवम्बर • 2021

देश के कुल दुग्ध उत्पादन में 18 फीसद है प्रदेश की हिस्सेदारी

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

जोत कम होने के कारण डेयरी उद्योग ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। प्रदेश का कुल दुग्ध उत्पादन 305 लाख मैट्रिक टन है जो देश के कुल दुग्ध उत्पादन का 18 फीसद है। पशुपालन को बढ़ावा देकर दुग्ध उत्पादन और बढ़ाने के लिए सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि भी लगातार प्रयासरत है।

विवि के निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि प्रदेश में 70 फीसद ग्रामीण आबादी है, जिनका मुख्य व्यवसाय खेती के साथ पशुपालन होता है।

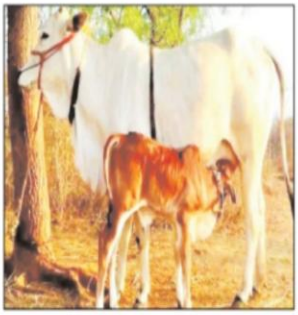

पशुपालक किसानों के लिए सीएसए की सलाह

छोटी जोत के कारण दुग्ध उत्पादन ही प्रदेश की ग्रामीण व्यवस्था का मुख्य आधार

उन्होंने बताया कि प्रदेश में कुल 190 लाख गौवंश, 330 लाख गाय-भैंस वंश, 145 लाख बकरियां तथा 10 लाख भेड़ें हैं। उन्होंने कहा कि दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए दुधारू पशुओं जैसे- गाय-भैंस की इस बदलते मौसम में देखभाल आवश्यक है। पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य और दुग्ध उत्पादन को बनाए रखने के लिए भैंसों की को 2.5 लीटर दूध पर 1 किलो रातब तथा गाय को 3 किलो दूध पर 1 किलो रातब प्रतिदिन का अनुमान लगाकर पशुओं को खिलाना चाहिए। इसके साथ साथ कम से कम कुल आहार का 2/3 भाग हरा चारा तथा 1/2 सूखे चारे का प्रयोग करना चाहिए। खुराक के साथ प्रतिदिन 40 से 50 ग्राम मिश्रण लवण का प्रयोग करना चाहिए, जिससे दुग्ध उत्पादन में कमी न आये।

डॉ.प्रकाश का कहना है कि इस बदलते मौसम में संक्रामक रोगों के फैलने की संभावना भी ज्यादा रहती है। इसके लिए पशुओं का टीकाकरण यदि न कराया हो तो करवा लें तथा कड़वे, बछियों की सुरक्षा व अंतः परजीवी व वाह्य परजीवी के नियंत्रण के लिए स्थानीय पशु चिकित्सक से दवा लेकर खिलाएं। वर्तमान समय में जो भी हरा चारा उपलब्ध हो उसे तुरंत खेत से काट कर न खिलाएं। दलहनी चारे को भी गेहूं व धान की भूसे के साथ मिलाकर पशुओं को खिलाएं। दुधारू पशुओं, बछड़ों, बछियों को खुले में न बांधे। सर्दी से पशुओं का बचाव अवश्य करें। हमेशा पशुओं को ताजा पानी पिलाएं।

टेरा-विटेरा | लखनऊ और देवरापुर से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश
'भाग नहीं, जान को खतरा इसलिए छिपा... 12 | भाजपा नेताओं के कथित भड़काऊ बयानों पर लगे... 03
जन एक्सप्रेस
janexpressnews janexpressive janexpressive www.janexpressive.com/epaper
लखनऊ | संस्करण | 23 नवंबर, 2021

एडवाइजरी: सर्दी से पशुओं का बचाव अवश्य करें व हमेशा ताजा पानी ही पिलाएं

जन एक्सप्रेस। कानपुर

उत्तर प्रदेश में 70 फीसदी ग्रामीण आबादी है जिनका मुख्य व्यवसाय खेती के साथ पशुपालन भी होता है जोत कम होने के कारण डेयरी उद्योग ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है यह बात सीएसएयू के निदेशक शोध डॉ. एच. जी. प्रकाश ने सोमवार को पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि प्रदेश का कुल दुग्ध उत्पादन 305 लाख मैट्रिक टन है जो कि देश के कुल उत्पादन का 18 फीसदी है। उन्होंने पशुपालकों को दुधारू पशुओं की इस बदलते मौसम में देखभाल करने की सलाह देते हुए कहा कि भैंसों को 2.5 लीटर दूध पर 1 किलो रातब तथा गाय को 3 किलो दूध पर 1 किलो रातब प्रतिदिन का अनुमान लगाकर खिलाना चाहिए इसके साथ कम से कम कुल आहार का 2/3 भाग हरा चारा तथा 1/2 सूखे चारे का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस बदलते मौसम में संक्रामक रोगों के फैलने की संभावना ज्यादा रहती है इसके लिए पशुओं का टीकाकरण जरूर कराना चाहिए तथा छोटे बच्चों बछड़े, बछियों को अंतः परजीवी व वाह परजीवी के नियंत्रण के लिए स्थानीय पशु चिकित्सक से दवा लेकर खिलाएं। उन्होंने कहा कि दुधारू पशुओं बछड़ों, बछियों को खुले में न बांधे। सर्दी से पशुओं का बचाव अवश्य करें तथा हमेशा पशुओं को ताजा पानी पिलाएं।

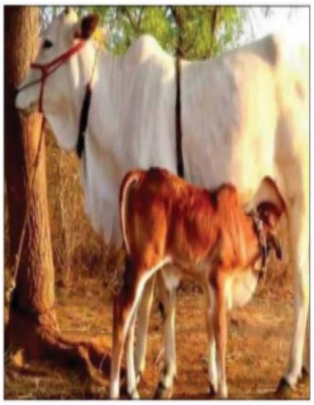

वर्ष 15 अंक 319 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, मंगलवार 23 नवम्बर 2021
लखनऊ व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,एटा, हरदोई, उन्नाव,लखनऊ देहात में प्रसारित
RNI N.UPHIN/2007/27090
दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार डेयरी उद्योग : डॉ. एचजी प्रकाश

कानपुर (नगर छाया समाचार)।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक शोध डॉक्टर एचजी प्रकाश ने पशुपालक भाइयों हेतु एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि उत्तर प्रदेश में 70ल ग्रामीण आबादी है जिनका मुख्य व्यवसाय खेती के साथ पशुपालन भी होता है उन्होंने बताया जोत कम होने के कारण डेयरी उद्योग ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।उन्होंने कहा प्रदेश में कुल 190 लाख गौवंश, 330 लाख भैंस वंश,145 लाख बकरियां तथा 10 लाख भेड़ें हैं। प्रदेश का कुल दुग्ध उत्पादन 305 लाख मैट्रिक टन है जो कि देश के कुल उत्पादन का 18ल है। उन्होंने पशुपालक भाइयों को सलाह दी है कि दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए दुधारू पशुओं जैसे गाय भैंस की इस बदलते मौसम में देखभाल आवश्यक है। पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य और दुग्ध उत्पादन को बनाए रखने के लिए भैंसों की को 2.5 लीटर दूध पर 1 किलो रातब तथा गाय को 3 किलो दूध पर 1 किलो रातब प्रतिदिन का अनुमान लगाकर पशुओं को खिलाना चाहिए। इसके साथ साथ कम से कम कुल आहार का 2/3 भाग हरा चारा तथा 1/2 सूखे चारे का प्रयोग करना चाहिए।

खुराक के साथ-साथ प्रतिदिन 40 से 50 ग्राम मिश्रण लवण का प्रयोग करना चाहिए जिससे दुग्ध उत्पादन में कमी न आए उन्होंने यह भी कहा कि आवश्यक सभी तत्व पशुओं को प्राप्त हो जाते हैं। पशुपालकों को उन्होंने सलाह दी है कि इस बदलते मौसम में संक्रामक रोगों के फैलने की संभावना ज्यादा रहती है इसके लिए पशुओं का टीकाकरण यदि न कराया हो तो करवा लें तथा छोटे बच्चों बछड़े, बछियों को अंतः परजीवी,व वाह परजीवी के नियंत्रण के लिए स्थानीय पशु चिकित्सक से दवा लेकर खिलाएं। वर्तमान समय में जो भी हरा चारा उपलब्ध हो उसे तुरंत खेत में से काट कर न खिलाए तथा दलहनी चारे का भी गेहूं व धान की भूसे के साथ मिलाकर पशुओं को खिलाएं। दुधारू पशुओं बछड़ों,बछियों को खुले में न बांधे। सर्दी से पशुओं का बचाव अवश्य करें। तथा हमेशा पशुओं को ताजा पानी पिलाएं।

दैनिक जागरण कानपुर 23/11/2021

पशुओं का टीकाकरण न करवाया हो तो करवा लें

कानपुर : मौसम बदल रहा है, जरूरी है कि सभी पशुपालक अपने पशुओं का टीकाकरण करा लें। ताकि उनमें संक्रामक रोग न फैले। सोमवार को सीएसए में निदेशक शोध डा. एचजी प्रकाश ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी की। डेयरी उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार है। (वि.)